आपातकाल में सृजन फुलवारी

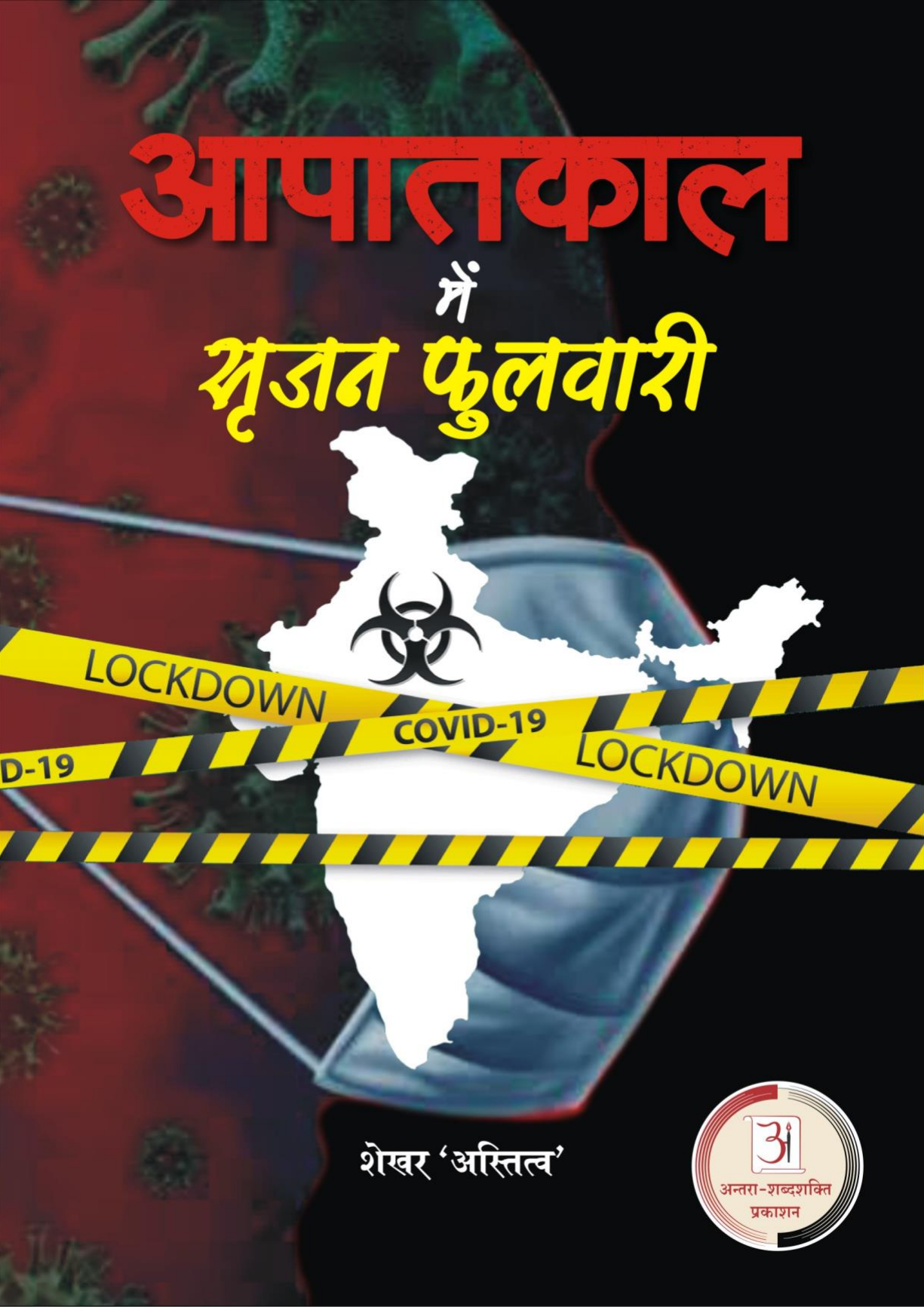

शेखर 'अस्तित्व'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

शेखर 'अस्तित्व'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-182-4

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, शेखर 'अस्तित्व'
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SHEKHAR ASTITWA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	कथरी में पैबंद	6
2.	मानवता का ठेका	7
3.	धन्य हो तुम	8
4.	कॉमरेड दिल्ली में बैठा!	9
5.	खुद को खाली कर के आना	10
6.	हम फिर से दीप जलाएंगे	11
7.	घर में बैठिए	12
8.	कृतज्ञता गीत	13
9.	जान है.. तो जहान है..!	14
10.	तब जाकर एक गीत बना है!	15
11.	तन है लेकिन प्राण नहीं है!	16
12.	बस वही भगवान है मेरा!	17
13.	ग़ज़ल	18
14.	एक तरफ होना पड़ेगा!	19
15.	मैं सनातन हूँ!	20
16.	हम दिल्ली से दूर रहे हैं!	21

कथरी में पैबंद

बाप से बच्चों की गलतियां छुपा रई है।
नालायक, दुष्टों पर दया लुटा रई है।
कर रई है, कुदरत ओज़ोन की तुरपाई,
अम्मा कथरी में पैबंद लगा रई है।

हाथ में तख्ती लेकर हम इतराएंगे,
लगा लगा कर नारे, गला सुखाएंगे।
पड़े हुए हैं जान के लाले हमको ही,
हम इस धरती को क्या खाक बचाएंगे?

आंगन वाला नीम तो हमने काट दिया,
गौरैया छप्पर में नीड बना रई है।
अम्मा कथरी में पैबंद लगा रई है।

खामोशी को गौर से सुनकर ये जाना,
हर लम्हे में सौ सौ सदियां बोल रही।
हम लोगों ने मिलकर मैली इन्हे किया,
निर्मल बहती सारी नदियां बोल रही।

कल कल करती अपने शापित जीवन की,
राम कहानी तट को लहर सुना रई है।
अम्मा कथरी में पैबंद लगा रई है।

मानवता का ठेका

जिससे जैसा पाया उससे, वैसा ही व्यवहार किया है।
मानवता का ठेका जग में, केवल मैंने नहीं लिया है।।

लेखक हूं इसका क्या मतलब? देशभक्ति को ताक पे रख दूं?
बात करूं झूठी समता की, और भविष्य को आग पे रख दूं?
मुझसे ये सब हो न सकेगा, मैंने कटु अनुभव को जिया है।
मानवता का ठेका जग में, केवल मैंने नहीं लिया है।

ये अनुराग, मुनव्वर जैसे, मूढ़मती क्या लेखक नहीं है?
घर में आग लगाने वाली, अरुंधती क्या लेखक नहीं है?
इन जैसों ने ज़ख्म दिए जो, उन ज़ख्मों को स्वयं सिया है।
मानवता का ठेका जग में, केवल मैंने नहीं लिया है।

वामपंथ की चरस फूंककर, ज्ञान पेलने वालों सुन लो!
भारत-भू की अखंडता से, नित्य खेलने वालों सुन लो!
महाकाल का भक्त हूं, मैंने युग-युग से विषपान किया है।
मानवता का ठेका जग में, केवल मैंने नहीं लिया है।।

देशद्रोह करके जो खाऊं, ऐसी रोटी भाड़ में जाए।
मां का आंचल फाड़ के पहनूं, वो लंगोटी भाड़ में जाए।
इस माटी की खातिर मेरे, पुरखों ने बलिदान दिया है।
मानवता का ठेका जग में, केवल मैंने नहीं लिया है।।

धन्य हो तुम!

मरघट के सन्नाटे में
लाशों के ढेर के बीच बैठकर
जलती चिता के प्रकाश में
हे श्रृंगार गीत लिखने वाले कवि!

धन्य हो तुम!

नमन है तुम्हारे हृदय में
स्थित पाषाण को।
प्रणाम है तुम्हारी
निर्लिप्त भावना को।

तुम्हारा यह
अद्भुत चैतन्य
अगम्य है
मुझ जैसे मूढ़ के लिए।

कॉमरेड दिल्ली में बैठा!

खूब क्रांति का भाषण पेले,
मजबूरों की जान से खेले,
बात करे दुनिया की, अपना देश भुलावे हो,
कॉमरेड दिल्ली में बैठा, गाल बजावे हो।।

लिए कटोरा सांझ सकारे,
एन जी ओ का नाम उचारे,
मांगे भीख ज़माने भर से,
फंड विदेशी नित्य डकारे।
बेचे अपनी दरिद्रता को, लाज न आवे हो।
कॉमरेड दिल्ली में बैठा, गाल बजावे हो।।

सुकमा अबूझमाड़ को ध्यावे,
फूंके माल, जाम छलकावे।
बैठ के ए. सी. कमरों में वो,
बस्तर की रणनीति बनावे।
खुद छिप जावे, दुखिया को बंदूक थमावे हो,
कॉमरेड दिल्ली में बैठा, गाल बजावे हो।।

अस्थि पंजर पड़े दिखाई,
रो रोकर आंखें पथराई।
फंसी कुपोषण के पंजे में,
भावी पीढ़ी है कुम्हलाई।
फूलवती की छाती सूखी, दूध ना आवे हो,
कॉमरेड दिल्ली में बैठा, गाल बजावे हो।।

खुद को खाली कर के आना!

अहंकार के उच्च शिखर से,
नीचे स्वयं उतर के आना।
मुझ से मिलने का मन हो तो,
खुद को खाली कर के आना।

अभी तुम्हारे मन के भीतर,
भाव सिंधु में ज्वार उठा है।
अभी तृप्ति है सिर्फ दिखावा,
तृष्णा का अंबार उठा है।

सुनो! जल्दबाजी मत करना,
थोड़ा और ठहर के आना।
मुझसे मिलने का मन हो तो,
खुद को खाली कर के आना।

मैं जब से जन्मा तब से ही,
ढाई आखर बांच रहा हूँ।
किसी आदिवासी बच्चे सा,
धूल उड़ाते, नाच रहा हूँ।

तुम अपने सब ग्रंथ, पोथियां,
वहीं, ताक पर धर के आना।
मुझ से मिलने का मन हो तो,
खुद को खाली कर के आना।

हम फिर से दीप जलाएंगे

तमसो मा ज्योतिर्गमय का,
जग को संदेश सुनाएंगे।
हम दीप जलाते आए हैं,
हम फिर से दीप जलाएंगे।

हम वैदिक संस्कृति के वाहक,
हम मानवता के प्रहरी हैं।
विश्वास के दीपक के आगे,
कब दुख की रातें ठहरी हैं?

हम विश्वगुरु हैं सदियों से,
हम जग का तिमिर मिटाएंगे।
हम दीप जलाते आए हैं,
हम फिर से दीप जलाएंगे।

दीपक बालो, यह मत सोचो,
क्या होगा दीप जलाने से!
फल की चिन्ता तज कर्म करो,
मत चूको सत अपनाने से।

जो पथ पुरखों ने दिखलाया,
उस पथ पर चलते जाएंगे।
हम दीप जलाते आए हैं,
हम फिर से दीप जलाएंगे।

घर में बैठिए

रात दिन समझा रही सरकार, घर में बैठिए।
कह रहे हैं टी. वी. और अखबार घर में बैठिए।

बढ़ रही निर्दय महामारी ये सुरसा की तरह,
त्राहि-त्राहि कर रहा संसार, घर में बैठिए।

चीन, इटली, जर्मनी, स्पेन हो या अमरीका,
हो गई महाशक्तियां लाचार, घर में बैठिए।

तोड़ कोरोना का अब तक मिल नहीं पाया हुजूर,
जान से अपनी अगर है प्यार, घर में बैठिए।

रैलियां, धरना, प्रदर्शन कीजिएगा बाद में,
तक रहा है रास्ता परिवार, घर में बैठिए।

सिर सलामत रख सके तो टोपियां होंगी हज़ार,
वक़्त की है आज ये दरकार, घर में बैठिए।

चाहे जुम्मा हो या नवरात्रि हो कल फिर आएंगे,
तब मना लेना सभी त्योहार, घर में बैठिए।

दूसरा चारा नहीं है, घर में रहने के सिवा,
हो न जाए ज़िंदगी दुश्वार, घर में बैठिए।

बीवी बच्चे, रिश्ते नाते, दिल, वतन, इंसानियत,
तुमको सबका वास्ता है यार, घर में बैठिए।

सामने है प्रश्न सारे विश्व के "अस्तित्व" का,
होगा दुनिया पर बड़ा उपकार, घर में बैठिए।

कृतज्ञता गीत

जो कोरोना से लड़ने में,
निस्वार्थ भाव से लगे रहे।
जो मानवता के प्रहरी बन,
दिन रात देश हित जगे रहे।
जिस जिसने निभाई, अथक रूप से,
अपनी ज़िम्मेदारी है।

दिल उन सबका आभारी है।
दिल उन सबका आभारी है।।

डॉक्टर्स हों, या नर्स हो,
कंडक्टर या ड्राइवर्स हों।
हों बैंक, सुरक्षाकर्मी या,
जनसेवी वोलेंटियर्स हों।
स्वच्छता कर्मियों के संग ही,
जो मीडिया कर्मचारी हैं।

दिल उन सबका आभारी है।
दिल उन सबका आभारी है।।

कोरोना से, इस जंग में,
जीतेंगे हम, विश्वास है।
संकल्प है, संयम है तो,
हर मंजिल अपने पास है।
जिस जिसने भी कोरोना से,
लड़ने की, की तैयारी है।

दिल उन सबका आभारी है।
दिल उन सबका आभारी है।।

जान है.. तो जहान है..!

सब से ये कहना है, घर में ही रहना है।
जान ही तो प्यारे तेरे, जिस्म का गहना है।

कोरोना से जीतना है, लंबी है लड़ाई अभी,
घर से निकलने की,बारी नहीं आई अभी।
घर में रहे तो खाली, बीवी से लड़ाई होगी,
बाहर यदि निकले तो, जमके तुड़ाई होगी।

सब से ये कहना है, घर में ही रहना है।
जान ही तो प्यारे तेरे, जिस्म का गहना है।

खाली पीली बैठे हो तो, पहले मेरी बात सुनो।
राई जीरा मिक्स करो, जीरे में से राई चुनो।
सब यही करते हैं, फ़ालतू की बात छोड़ो।
झाड़ू मारो, पोछा मारो, आलू छिलो, भाजी तोड़ो।

सब से ये कहना है, घर में ही रहना है।
जान ही तो प्यारे तेरे, जिस्म का गहना है।

रोड पे ना जाओ यारो, घर में निवास करो,
फैमिली के साथ रहके, थोड़ा टाइम पास करो।
टी वी देखो, गेम खेलो, योगा करो, ध्यान करो।
लॉक डाउन है तो, लॉकडाउन का सम्मान करो।

सब से ये कहना है, घर में ही रहना है।
जान ही तो प्यारे तेरे, जिस्म का गहना है।

तब जाकर एक गीत बना है!

पीर प्रसव की मुझसे पूछो, हाँ मैंने कविता को जना है!
भाव-कोख में 'अक्षर' पाले, तब जाकर इक गीत बना है।

भीड़ नज़र क्यूँ, कैसे आती?
ख़ुद से बाहर निकल न पाया!
मैं 'अन्तस-पथ' का 'बंजारा',
जग की राह नहीं चल पाया।
इस 'संवेदन-हीन' जगत में,
निष्ठुरता का तिमिर घना है!
अनगिन रैन कलम सुलगाई, तब जाकर इक गीत बना है।

जब भी कुछ लिखना 'चाहा' तो,
शब्द नहीं कोई मन बैठे!
निज अन्तर्मन में झाँका तो,
गुज़रे पल कविता बन बैठे!
आयु को ही गुरूता देते सब,
चिन्तन की चर्चा भी मना है!
मन-मन्थन कर अश्रु पिये हैं, तब जाकर इक गीत बना है।

शब्दजाल का 'डमरू' लेकर,
फिरते कई 'मदारी' देखे!
तुकबन्दी के 'बन्दर' पाले,
कविता के व्यापारी देखे!
मस्ती में 'मतिमंद-मदारी',
काव्य 'जमूरा' रक्त-सना है!
हर पल होम किया है अपना, तब जाकर इक गीत बना है।

तन है लेकिन प्राण नहीं है!

है अतीत की यादें केवल, वर्तमान का भान नहीं है!
तुम्हीं नहीं तो कैसा जीवन? तन है लेकिन प्राण नहीं है!

शब्द नहीं तो अर्थ कहाँ का? देह बिना कैसी परछाई?
नींद नहीं तो कैसे सपने? किरण बिना कैसी अरूणाई?

पुष्प नहीं तो गंध कहाँ की? लक्ष्य नहीं तो कैसी राहें?
नैन नहीं तो दर्पण कैसा? तुम्हीं नहीं तो अब क्या चाहें?

मृत्युलोक के महासागर में, इक बेबस तिनके सा बहना!
आस नहीं! उल्लास नहीं!! तुम पास नहीं और जीते रहना!

तुम्ही कहो, ये साँसें लेना! क्या सचमुच विषपान नहीं है?
तुम्ही नहीं तो कैसा जीवन? तन है लेकिन प्राण नहीं है।

सूख गई शब्दों की सरिता, कटे कल्पनाओं के पांखें!
कविताओं के हरितिम तरू से, टूट गई छंदों की शाखें!

वर्ण सभी पर्णों की भांति, निर्जिव होकर बिखर गए हैं!
कलम थम गई चलते चलते, हाथ अचानक ठहर गए हैं!

अर्धलिखित पृष्ठों के पंछी, तड़प रहे हैं बिना तुम्हारे!
गीत बेचारे, पथ के मारे, थक कर हारे, तुम्हे पुकारें!

गीत, लेखनी, पृष्ठ वहीं हैं, पर गीतों में जान नहीं है!
तुम्हीं नहीं तो कैसा जीवन, तन है लेकिन प्राण नहीं है!

बस वही भगवान है मेरा!

वो जो मजदूरों के माथे पर चमकता है,
वो जो छैनी और हथौडी में खनकता है,
बस वही भगवान है मेरा- २

चिलचिलाती धूप अपने काँधों पर ढोता है जो,
सर्द रातें ओढकर फुटपाथ पर सोता है जो !
जिसकी सूखी अँतडियों में भूख पलती है सदा,
धौंकनी सी पसलियों में आग जलती है सदा !
वो जो संघर्षों की भट्टी में धधकता है,
वो जो नवनिर्माण की बुनियाद रखता है !
बस वही भगवान है मेरा- २

सूखे बंजर खेत में अपना लहू बोता है जो,
फिर भी है मजबूर, आँसू खून के रोता है जो,
खुरदुरे हाथों के छालों में जो रहता है सदा,
और पसीने में नमक बनकर जो बहता है सदा,
झोपडी की टूटी छत से जो टपकता है,
भात बनकर जो पतीले में खदकता है !
बस वही भगवान है मेरा- २

ग़ज़ल

अपनी संकीर्णता पे ऐसे अटकते क्यूं हो?
बात मुद्दे की करो पथ से भटकते क्यूं हो?

बुद्धिजीवी हो बड़े, तो जवाब दो खुलकर,
ऐसे हकलाते हो क्यूं, थूक गटकते क्यूं हो?

आओ संवाद करो, तर्क दो, चिल्लाओ मत,
दांत क्यूं पीसते हो? पांव पटकते क्यूं हो?

क्या कभी सोचा, कभी गौर किया है इस पर,
आज तुम देश की आंखों में खटकते क्यूं हो?

उसकी तो लाज रखो, दूध पिलाया जिसने,
मातृभूमि को ही मक्खी सा झटकते क्यूं हो?

सीधे हो जाओ तो सब सीधा नजर आएगा,
मूर्ख चमगादड़ों से उल्टे लटकते क्यूं हो?

वक़्त है अब भी संभल जाओ,आग मत मूतो,
ले के बैसाखियां बलखाते मटकते क्यूं हो?

एक तरफ होना पड़ेगा!

सच्चे मन से विश्व का कल्याण यदि तुम चाहते हो,
तो ये निश्चित जान लो, अब एक तरफ होना पड़ेगा।

आसुरी शक्ति यहां अब तामसिक धुन गा रही हैं।
सिर से भावी पीढ़ियों के, छांव छीनी जा रही है।
ढा रही ज़ुल्मो सितम चहुं ओर जयचंदों की टोली,
बाड़ खुद बेशर्म होकर खेत अपना खा रही है।

अब अखंडित राष्ट्र का निर्माण, यदि तुम चाहते हो,
तो ये निश्चित जान लो अब एक तरफ होना पड़ेगा।

कौन है, विपरीत धारा के यहां जो बह सकेगा?
कौन है जो विश्व के कल्याण हित दुख सह सकेगा?
कंठ में जब सत्य के स्वर को दबाया जा रहा हो।
देख यह कोई भला निष्पक्ष कैसे रह सकेगा?

हो न मानवता कभी निष्प्राण, यदि तुम चाहते हो,
तो ये निश्चित जान लो, अब एक तरफ होना पड़ेगा।

कल समय पूछेगा सबसे, सत्य जब घायल पड़ा था,
कौन मजबूती से उसके पक्ष में डटकर खड़ा था।
कौन छल बल या प्रलोभन से मिला शत्रु से जा कर,
कौन दुश्मन की तरफ से युद्ध में छुप कर लड़ा था।

व्यर्थ वीरों का न हो बलिदान, यदि तुम चाहते हो,
तो ये निश्चित जान लो अब एक तरफ होना पड़ेगा।

मैं सनातन हूँ!

मेरा ठोस रूप हिम-कण हैं,
मेरा तरल-रूप है पानी!
मेरा वाष्प-रूप बादल हैं!
शाश्वत है मेरी कहानी!
मैं सनातन हूँ।

मैं बीज हूँ, मैं ही फल हूँ,
मैं पर्ण, पुष्प, तरुवर हूँ।
सृष्टी ने जिसे नित गाया,
अनहद रूपी वह स्वर हूँ।

संघर्ष, विजय पथ मेरा,
अविरल है मेरी रवानी।
हर जीत हुई नतमस्तक,
जब हार न मैंने मानी।
मैं सनातन हूँ।

जिसे शस्त्र छेद ना पाए,
जिसे अग्नि जला ना पाए।
जिसे वायु सुखा सके ना,
जिसे जल भी गला ना पाए।

अनुवाद पंच-तत्वों का,
भौतिक तन क्षुद्र निशानी।
सौ में से घटें सौ तब भी,
सौ बचें, बात यह जानी।
मैं सनातन हूँ।
मैं सनातन हूँ।

हम दिल्ली से दूर रहे हैं!

बोझ लदे कांधे बाबूजी,
सदा थकन से चूर रहे हैं।
नहीं चीन्हता कोई हमकू,
हम दिल्ली से दूर रहे हैं।

भरी दुपहरी नित खेतों में,
हम तो बोते रहे पसीना।
फिर भी भूख पड़ी है खानी,
रोज पड़ा है आंसू पीना।

पगडंडी से सुनते आए,
राजमार्ग अति क्रूर रहे हैं।
नहीं चीन्हता कोई हमकू,
हम दिल्ली से दूर रहे हैं।

झक्क सफेदी ओढ़े चेहरे,
और दमकते हैं दिल्ली में।
जो लाईट में हैं उन पर ही,
फ़्लैश चमकते हैं दिल्ली में।

वो हैं शीश मुकुट सदियों से,
हम पावों की धूर रहे हैं।
नहीं चीन्हता कोई हमकू,
हम दिल्ली से दूर रहे हैं।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

शेखर 'अस्तित्व'

Email- astitwa.shekhar@gmail.com

Mobile - 8898481462

आज कोरोना वायरस रूपी महामारी ने सारे विश्व को अपनी चपेट में ले रखा है। सोशल डिस्टेंसिंग के अलावा इस महामारी से बचाव का फिलहाल कोई दूसरा रास्ता भी नहीं है। ऐसी स्थिति में सृजन का महत्व बहुत ज़्यादा बढ़ जाता है।

चूंकि हर व्यक्ति की बाहरी गतिविधियां पूर्ण रूप से बंद हैं, अतः घर में रहते हुए स्वयं को सृजन में व्यस्त रखना सबसे अच्छा, सकारात्मक और सार्थक कार्य है। ऐसी आपातकालीन स्थिति में तमाम तरह के भय और नकारात्मक समाचारों के बीच खुद को सिर्फ और सिर्फ नव सृजन के द्वारा ही व्यस्त, प्रसन्न और सकारात्मक बनाए रखा जा सकता।

मैं हृदय से धन्यवाद देना चाहूंगा अंतरा शब्दशक्ति परिवार को, कि उन्होंने ऐसे विकट समय में इस सकारात्मक और सार्थक कार्य का बीड़ा उठाया। रचनाकारों को न सिर्फ इससे नव सृजन की प्रेरणा मिलेगी, बल्कि एक तरह से यह प्रयास, इन विषम परिस्थितियों में सृजित रचनाओं का ऐतिहासिक दस्तावेज भी होगा।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-182-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/